

मैं विज्ञान कथाएँ क्यों लिखता हूँ?

जयंत नारलीकर



वह दिन मुझे आज भी भली-भाँति याद है, जब मुझे विज्ञान कथा लिखने का जोश आया था। यह बात सन् 1974 की होगी, अहमदाबाद में एक जानी-मानी विज्ञान संस्था की ओर से 'विज्ञान संवाद' का आयोजन किया गया था। इस संवाद में मंच पर आसीन वक्ता अपनी ओर से श्रोताओं को झपकी लेने देने का काम पूरी मुस्तैदी से कर रहे थे। कुछ श्रोता उन व्याख्यानों को बेहद लाचारी के साथ सुनने की कोशिश कर रहे थे। मैंने तो उनके व्याख्यान को सुनने का खयाल पहले ही मन से निकाल दिया था।

विज्ञान कथाओं का उद्गम

ऐसे ही किसी पल मुझे भीतर से यह खयाल आया कि क्यों न मैं विज्ञान कथा लिखने की शुरुआत करूँ। संवाद के आयोजकों ने जो कागज़ मुहैया करवाए थे, उनमें से कुछ कागज़ मैंने लिए और उन पर लिखना शुरू कर दिया।

मेरी विज्ञान कथा 'कृष्ण विवर' (ब्लैक होल) इस तरह सबके सामने आई। विज्ञान कथा लिखने का वो मेरा पहला प्रयास था। इस कथा को मैंने मराठी में लिखा था। उन्हीं दिनों

महाराष्ट्र में वैज्ञानिक सोच और विज्ञान में रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से 'मराठी विज्ञान परिषद, मुम्बई' नामक संस्थान ने विज्ञान कथाओं के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया था। मेरे मन में इस कहानी को उस प्रतियोगिता में भेजने का विचार आया।

प्रतियोगिता की शर्तों के मुताबिक, शब्द संख्या, कहानी की लम्बाई एवं अन्य शर्तों को देखते हुए मेरी विज्ञान कथा इस प्रतियोगिता में एकदम फिट बैठती थी। मैंने प्रतियोगिता का एंट्री फॉर्म - नारायण विनायक जगताप - के नाम से भरा। इस नाम के पहले अक्षर उलट क्रम में मेरे वास्तविक नाम (जयंत विष्णु नारलीकर) से मेल खाते थे (जगताप का ज, विनायक का वि, नारायण का ना)। मराठी विज्ञान परिषद के पदाधिकारी मेरी लिखावट और हस्ताक्षर को पहचान लेंगे, इस डर से मैंने अपनी पत्नी मंगला से कहा कि वो अपनी लिखाई में उस विज्ञान कथा को लिख दें। विज्ञान कथा को किसी अन्य पते के साथ प्रतियोगिता में भेज दिया गया।*

कुछ दिनों बाद जब पता चला कि मेरी इस विज्ञान कथा को 'प्रथम पुरस्कार' मिला है तो वह मेरे लिए एक सुखद एहसास था। मैं विज्ञान

कथा लिख सकता हूँ, यह दिलासा मिलने के बाद और विज्ञान कथा लिखने पर गम्भीरता से विचार न करते हुए, मैं यहीं रुकने वाला था। तब तक मैं यह सोचने लगा था कि विज्ञान कथा का प्रथम पुरस्कार छद्म नाम से कहानी लिखने वाले एक वैज्ञानिक को मिला है, यह ज़ाहिर होने के बाद मराठी विज्ञान परिषद इस बात का पर्याप्त प्रचार-प्रसार करके अन्य लेखकों को भी विज्ञान कथाएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। लेकिन इस दौरान एक ऐसी घटना घटी जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। वह घटना थी - श्रीमती दुर्गाबाई भागवत द्वारा अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में मेरे लेखन की प्रशंसा करना।

महान व्यक्तियों द्वारा खास मौकों पर कही गई विशेष बातों से साहित्य में नई धाराएँ बनने लगती हैं। इससे मराठी विज्ञान कथाएँ अछूती क्यों रहतीं।

इस अखिल भारतीय मराठी सम्मेलन के बाद विज्ञान कथा मराठी साहित्य का एक हिस्सा बन गई। कई अखबारों और पत्रिकाओं के सम्पादकों को ऐसा महसूस होने लगा था कि उनके प्रकाशनों में विज्ञान कथाएँ

* नारलीकर इस प्रतियोगिता में एक सामान्य लेखक की हैसियत से हिस्सा लेना चाहते थे। उन्हें डर था कि वे वास्तविक नाम उजागर करेंगे तो उनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों की वजह से निर्णायकों का फैसला प्रभावित हो सकता है। इसलिए उन्होंने आयोजकों से अपना वास्तविक नाम और पहचान छुपाकर रखी।

होनी ही चाहिए। मराठी पत्रिकाओं के 'दीपावली विशेषांक' के लिए सम्पादक विज्ञान कथाओं के बारे में पूछताछ करने लगे थे। मेरे पास रोज़ इस बाबत खत भी आते थे। ये सभी बातें मेरे लिए अनअपेक्षित थीं।

मुझे लगता है, यहाँ एक बात साफ़ कर देना चाहिए कि मेरे विज्ञान कथा लिखने से पहले भी मराठी में विज्ञान कथा लिखी जाती थीं। सन् 1915 में 'मनोरंजन मैगज़ीन' में श्रीधर रानडे की विज्ञान कथा प्रकाशित हुई थी। इसके बाद 20वीं सदी के पाँचवें और छठवें दशक में काफी विज्ञान लेखक दिखाई देते हैं। इनमें से कुछ ने खुद से नए सिरे से विज्ञान कथाएँ लिखीं, तो कुछ ने अन्य भाषाओं की विज्ञान कथाओं का मराठी में अनुवाद किया। इन लोगों में डी.सी. सोमण, डी.पी. खांबेदे, नारायण धारप, बी.आर. भागवत के नाम प्रमुखता से लिए जा सकते हैं। सभी विज्ञान लेखकों के नाम यहाँ बता पाना सम्भव नहीं है। यहाँ तक पहुँचते हुए मुझे लगता है कि मैंने मराठी में विज्ञान कथाओं के उद्गम के बारे में मोटी-मोटी बात कर ली है।

विज्ञान कथाओं की ओर रुझान

मेरा रुझान विज्ञान कथाओं की ओर क्यों बढ़ा? इस पर सोचते हुए मुझे ऐसा महसूस हुआ कि खगोल विज्ञान का विद्यार्थी होने के नाते, वैज्ञानिक तथ्य क्या हैं और कहानी-

उपन्यासों में इसे किस तरह पेश किया जाता है, मुझे इसकी समझ थी। धरती पर इन्सान के अस्तित्व को देखें तो इतना-सा इन्सान और उसके इर्द-गिर्द की दुनिया का विशाल विस्तार। इस सारी कायनात को समझना काफी मुश्किल है। जे.बी.एस. हाल्डेन तो कहते हैं कि जितना हम समझते हैं, कायनात उससे कहीं ज्यादा जटिल है। जितना हम कायनात को जान पाए हैं, वह उससे कहीं ज्यादा गूढ़ है।

ऊपर के पैराग्राफ में कही बातों को समझें तो उसका लब्बोलुआब यह है कि विज्ञान कथा लिखने के लिए लेखकों को कभी भी कल्पनाओं की कमी महसूस नहीं होगी। बस, सवाल यह है कि आप इन कल्पनाओं को कथा में गूँथकर किस तरह पेश करने वाले हैं। विज्ञान कथा में एक सन्तुलन बनाकर चलना होता है। विज्ञान कथा को विज्ञान पाठ्यक्रम का स्वरूप देने से काम नहीं चलेगा। इसी तरह विज्ञान कथा को हॉरर कथा या परीकथा में रूपान्तरित करके भी काम नहीं चलेगा। कई विज्ञान कथाएँ (इनमें मेरे द्वारा लिखी कथाएँ भी शामिल की जा सकती हैं) इस किस्म के सन्तुलन के अभाव में उतनी प्रभावी नहीं बन सकीं।

जो इन्सान वैज्ञानिक हो और विज्ञान कथाएँ लिखता हो, उसे हमेशा एक फायदा मिलता है कि वह विज्ञान के किसी सवाल के बारे में जो



चित्र-1: प्रोफेसर जयंत नारलीकर (निधन - मई 2025) अपनी पत्नी मंगला नारलीकर (निधन - जुलाई 2023) के साथ।

सोचता है, उसे कहानी के रूप में अधिक प्रभावी ढंग से बता सकता है। जबकि ऐसे ही किसी सवाल पर शोध-पत्र लिखते समय उसे इतनी आज़ादी नहीं मिल पाती। शोध-पत्रों में तथ्यों और आँकड़ों पर ज़ोर दिया जाता है। आपकी अटकलों और अन्दाज़ों का स्थान गौण होता है।

विज्ञान कथा में कल्पनाशीलता के आधार पर जो कहा गया है, यदि वो भविष्य में सच साबित हो तो क्या होगा? फ्रेड हॉयल मेरे गुरु, मेरे मार्गदर्शक एवं विज्ञान कथा लेखन की प्रेरणा भी रहे हैं। उनकी एक विज्ञान कथा 'द ब्लैक क्लाउड', अपने दौर की मशहूर विज्ञान कथा रही है। अपनी इस कथा में उन्होंने हाइड्रोजन जैसे परमाणुओं-अणुओं और तारों के बीच फैले धूल कणों से

बादल बनने की कल्पना पेश की थी। 20वीं सदी के पाँचवें दशक में उन्होंने यह कल्पना पेश की थी लेकिन उस समय खगोल विज्ञान में काम करने वाले वैज्ञानिकों को यह विचार मान्य नहीं था। ऐसे घोर विरोध की वजह से हॉयल किसी वैज्ञानिक जर्नल में अपना शोध-पत्र पेश नहीं कर पाए। उन्होंने उस विचार पर 'ब्लैक क्लाउड' नाम से एक विज्ञान कथा लिखी जो बेहद मशहूर हुई। अगले कुछ दशकों में जो शोध हुए, उससे यह साबित हुआ कि सचमुच में ऐसे बादल और धूल कण अन्तरिक्ष में पाए जाते हैं।

ऐसा ही एक और किस्सा है। कुछ साल पहले पता चला कि स्विफ्ट टर्टल धूमकेतु जब अगली बार सूरज के पास से गुज़रेगा तब वह धरती से

टकराने वाला है। यह घटना 22वीं सदी में होगी। आने वाले समय में जब हमें इस धूमकेतु के बारे में और अधिक जानकारी मिलेगी तब इस तर्क या बात को सटीकता से परखा जा सकता है।

स्विफ्ट टर्टल धूमकेतु जैसी सम्भावित घटना को केन्द्र में रखते हुए मैंने कोई दो दशक पहले एक विज्ञान कथा लिखी थी। उस कहानी में ऐसे टकराव को रोकने के लिए जो उपाय मैंने सुझाए थे, वैसे ही तरीके आज के वैज्ञानिक भी सुझा रहे हैं। इसे देखकर मुझे सन्तोष का अनुभव हो रहा है। साथ ही, मैं सोचता हूँ कि यदि मान लिया जाए कि ऐसा खतरा सचमुच आ धमके तो मुझे पूरा विश्वास है कि 22वीं सदी के वैज्ञानिक इस खतरे को टालने का तरीका विकसित कर ही लेंगे।

मैं विज्ञान कथाएँ क्यों लिखता हूँ? रोज़ शोधकार्य के थकाऊ काम में से थोड़ा आराम मिले, इसलिए। सामान्य पाठकों को वैज्ञानिकों की दुनिया में जो चल रहा है, उसमें से कोई रोमांचक अनुभव दिया जाए। विज्ञान का महत्व और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर समाज की समझ बढ़े, इसलिए मैं विज्ञान कथाएँ लिखता हूँ।

मेरे कुछ साहित्यिक मित्र कहते हैं कि ऐसे नज़रिए या उद्देश्यों को सामने रखकर किए गए लेखन को साहित्य नहीं कहा जा सकता। ऐसे मित्रों से मैं पूछना चाहता हूँ कि एक

नज़रिए को सामने रखकर लिखे गए साहित्य को यदि आप साहित्य नहीं मानते हैं तो फिर तुलसीदास के रामचरित मानस को या महाराष्ट्र के सन्त-वाङ्मय को आप क्या कहेंगे? इस साहित्य को यदि आप साहित्य नहीं कहेंगे तो फिर आपको अपने साहित्य के लिए भी कुछ और मूल्य मापक इस्तेमाल करना चाहिए।

समीक्षाएँ एवं समीक्षक

अपनी बात को समाप्त करने से पहले कुछ बातचीत विज्ञान कथा समीक्षा एवं समीक्षकों के बारे में भी होनी चाहिए। मुझे लगता है कि समीक्षकों की कुछ टिप्पणियों पर जवाब देना भी ज़रूरी है। इस दुनिया में कोई भी इन्सान परिपूर्ण या परफेक्ट नहीं है। एक लेखक के रूप में मेरी भी कुछ सीमाएँ हैं जिनसे मैं भली-भाँति वाकिफ हूँ। मैं मराठी, हिन्दी और अँग्रेज़ी भाषा में लिखता हूँ। इन सभी भाषाओं में काफी लेखक मुझसे बहुत बेहतर हैं, यह बात भी मैं जानता हूँ। समीक्षकों द्वारा मेरे लेखन पर की गई टिप्पणियों को मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरी कथाओं के पात्र नीरस हैं, कथानक भी प्रभावी नहीं होते हैं आदि आदि।

परन्तु विज्ञान कथाओं की समीक्षा करते समय कुछ समीक्षक बेहद निम्न स्तर पर चले जाते हैं। इससे सम्बन्धित कुछ उदाहरण मैं यहाँ देना चाहता हूँ।

कुछ समीक्षकों को मुझसे शिकायत है कि मेरी कथाओं के पात्र अँग्रेज़ी के काफी सारे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। मैं ऐसे समीक्षकों से यह कहना चाहता हूँ कि वे एक पूरे दिन अँग्रेज़ी शब्दों का इस्तेमाल किए बिना, खालिस मराठी में बोलकर दिखाएँ। उनको तुरन्त समझ आ जाएगा कि रोज़मर्रा के जीवन में अँग्रेज़ी के शब्द किस कदर पैठ बनाए हुए हैं। अन्य भाषाओं के शब्द हमारी भाषा में आने से हमारी भाषा समृद्ध और विकसित ही होती जाती है। मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि आज हमारी भाषा में अपने-अपने से लगने वाले काफी सारे शब्द किसी समय बाहर से ही आए हैं। इस बात को भूलकर बिलकुल भी काम नहीं चलेगा।

अँग्रेज़ी को विज्ञान की भाषा के रूप में मान्यता मिल गई है। पूरी दुनिया में अँग्रेज़ी का काफी इस्तेमाल होता है। इसलिए विज्ञान कथाओं में टीवी, टेलिफोन, फ़ैक्स, रडार, रॉकेट जैसे कई तकनीकी शब्दों का इस्तेमाल होना सहज एवं स्वाभाविक है। भाषाविदों की समितियाँ कई अँग्रेज़ी शब्दों के लिए मराठी में गढ़े गए अनुदित शब्द तो उपलब्ध करवा देती हैं लेकिन सामान्य पाठकों के लिए वे शब्द काफी दुरुह होते हैं और सहजता से स्वीकार्य भी नहीं होते।

मेरी एक विज्ञान कथा 'धूमकेतु' की समीक्षा करते हुए समीक्षक ने एक

मज़ेदार टिप्पणी की। समीक्षक महोदय के मुताबिक, यह विज्ञान कथा फ्रेड हॉयल की विज्ञान कथा 'अक्टूबर द फर्स्ट इज़ टू लेट' की हू-ब-हू नकल है। इस टिप्पणी को पढ़कर मुझे अचरज हुआ। मैंने हॉयल की उस विज्ञान कथा को ध्यान से पढ़ा ताकि यह जान सकूँ कि इन दोनों कथाओं में क्या साम्य है। हॉयल की कथा पढ़ने के बाद मुझे समझ आया कि दोनों कथाओं में एक ही साम्य है और वो है - अक्टूबर का महीना।

बाद में, उन समीक्षक महोदय से मुलाकात का अवसर भी मिला। मैंने उनसे पूछा, "क्या आपने फ्रेड हॉयल की विज्ञान कथा पढ़ी है? यदि आपने पढ़ी है तो मेरी कहानी का कथानक उस कहानी से लिया गया है, यह किस आधार पर कह रहे हैं?" उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि मूल कहानी तो उन्होंने पढ़ी ही नहीं थी।

विज्ञान कथाओं की समीक्षा में इस तरह की कई भूल-चूक होती रहती हैं। कई बार इनमें से हास्य-विनोद की छटा भी बिखरती है। एक विद्वान ने विज्ञान कथाओं पर एक थीसिस लिखकर पेश की। इस थीसिस को एक यूनिवर्सिटी ने डॉक्टरेट की उपाधि से भी नवाज़ा। इस विद्वान ने भी पूर्व के समीक्षकों जैसी गलतियाँ की हैं। मूल लेखन को पढ़ने का कष्ट न करते हुए, डंके की चोट पर यह कह दिया कि भारतीय विज्ञान लेखक

अंग्रेज़ी विज्ञान लेखकों की विज्ञान कथाओं में से कथानक उठाते हैं।

कॉनन डायल की शेरलॉक होम्स वाली कहानियों का मैं दीवाना हूँ। मज़े के लिए ही मैंने एक प्रयोग किया। होम्स और वॉटसन को बतौर किरदार चुनते हुए, मैंने एक विज्ञान कथा लिखी। मराठी में कथा होने के बावजूद मैंने इस बात का ध्यान रखा कि शैली कॉनन डायल जैसी ही बनी रहे। कई पाठकों को ऐसा लगा कि यह उनकी किसी कहानी का अनुवाद है। कुछ पाठकों ने खत लिखकर मूल कथा के बारे में पूछताछ भी की थी।

हमारे एक समीक्षक महोदय ने तो कमाल ही कर दिया। अपनी पिछली टिप्पणी से एक कदम आगे बढ़कर यह बता दिया कि यह कहानी कॉनन डायल की मशहूर कहानी 'ओपल टियारा' से ली गई है। कॉनन डायल द्वारा ऐसे किसी शीर्षक से कोई कहानी न लिखी होने के बावजूद समीक्षक महोदय ने यह खोज की थी। मेरी कहानी 'रिलेटिविटी एण्ड टाइम ट्रेवल' पर लिखी गई थी। कॉनन डायल इस विषय पर कहानी नहीं लिख सकते थे क्योंकि जिस दौर में वे कहानियाँ लिख रहे थे, उस समय तक आइंस्टाइन का सापेक्षतावाद का सिद्धान्त जन सामान्य तक पहुँचा भी नहीं था। यदि इस सिद्धान्त के बारे में कोई ढंग से जानता था तो वे चन्द वैज्ञानिक ही थे जिन्हें इस विषय की समझ थी।

मैं वुड हाउस के लेखन को भी शौक से पढ़ता हूँ। मेरी एक कहानी वुड हाउस की शैली में लिखी गई थी। कई पाठक यहाँ भी गच्चा खा गए। बहुत-से लोगों को लगा कि मैंने वुड हाउस की कहानी का अनुवाद किया है। पहले की ही तरह मुझसे मूल कथा के लिए पूछताछ भी की गई। जब पाठकों को पता चला कि वुड हाउस ने ऐसी कोई कहानी लिखी ही नहीं है तब कई लोगों ने मेरे प्रयास की प्रशंसा भी की।

काफी लोग मुझसे पूछते हैं कि आपको विज्ञान कथा लिखने के लिए समय कैसे मिलता है। इस सवाल का लहज़ा कुछ ऐसा होता है कि शोधकार्य के काम को छोड़कर, मैं यह सब क्या कर रहा हूँ। मैं ऐसे सवाल पूछने वाले सभी लोगों को यह बताना चाहता हूँ कि विज्ञान कथा लेखन मेरा शौक है, थकान उतारने का एक तरीका है। एक मनोरंजन है।

विज्ञान कथाएँ लिखने के लिए समय किस तरह निकाला जाए, यह बात भी अहम है। दिन के 24 घण्टे में से आपको अच्छा-खासा समय नौकरी या व्यवसाय के कामकाज को देना होता है। इसके अलावा नींद और अन्य ज़रूरी कामों में भी समय जाता है। इन सबके बाद जो थोड़ा समय मिलता है, वो भी यँ ही निकल जाता है।

मुझे याद आता है कि एक बार मैनेजमेंट से सम्बन्धित एक व्याख्यान

में व्याख्यानकर्ता ने एक बाल्टी में अपने साथ लाए हुए बड़े-बड़े पत्थर के टुकड़े रखना शुरू कर दिए। जब बाल्टी टुकड़ों से भर गई तब उन्होंने श्रोताओं से पूछा, “क्या बाल्टी भर गई है?” सभी ने कहा, “हाँ, भर गई।”

तब व्याख्यानकर्ता ने कहा, “नहीं।” उन्होंने अपने साथ लाई हुई रेत को भी बाल्टी में उड़ेलना शुरू कर दिया। बाल्टी ऊपर तक रेत से भर गई थी। उन्होंने फिर पूछा, “क्या बाल्टी भर गई है?” इस बार श्रोताओं ने कहा, “नहीं।”

व्याख्यानकर्ता ने कहा, “सही फरमाया आपने।” फिर उन्होंने बाल्टी में पानी उड़ेलना शुरू किया। फिर उन्होंने श्रोताओं से पूछा, “इस सबसे आप क्या समझ पाए हैं?” श्रोताओं ने बताया, “जब आप अपने बड़े काम निपटा रहे होते हैं, उस दौरान आपको जो विश्राम के पल या फ्री

टाइम मिलता है, उसे छोटे कामों के लिए इस्तेमाल कर लेना चाहिए।”

थोड़ी देर बाद व्याख्यानकर्ता ने दूसरी बाल्टी में पहले रेत और फिर पानी भर दिया। इसके बाद पत्थर के बड़े टुकड़ों के लिए जगह ही नहीं बची थी। इसका मतलब कि आपको छोटे काम निपटाने में इतना समय निकल जाता है कि बड़े कामों के लिए समय ही नहीं बचता। यह था समय का नियोजन या टाइम मैनेजमेंट का महत्व।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि आप हवाई अड्डे पर बैठे होते हैं और अनाउंसमेंट होती है कि जहाज़ दो घण्टे की देरी से उड़ान भरेगा। ऐसे समय किसी को मत कोसिए। मेरी सलाह को याद कीजिए और विज्ञान कथा लिखना शुरू कर दीजिए! यकीन मानिए, आप भी विज्ञान कथा लिख सकते हैं।

जयंत नारलीकर (1938-2025): प्रबुद्ध वैज्ञानिक और विज्ञान कथाकार। केंब्रिज से गणित में डिग्रियाँ हासिल करने के बाद उन्होंने खगोल-विद्या और खगोल-भौतिकी में विशेष प्रावीण्य प्राप्त किया। किंगज़ कॉलेज के फेलो और इंस्टिट्यूट ऑफ थिओरेटिकल एस्ट्रोनॉमी के संस्थापक सदस्य के रूप में कुछ समय केंब्रिज में रहे। IUCAA (Inter-University Centre for Astronomy and Astrophysics), पुणे के संस्थापक सदस्य। नारलीकर ‘पद्मभूषण’ और ‘पद्मविभूषण’ सहित कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

मराठी से अनुवाद: माधव केलकर: संदर्भ पत्रिका से सम्बद्ध हैं।

यह लेख राजहंस प्रकाशन, पुणे द्वारा सन् 2020 में मराठी भाषा में प्रकाशित *समग्र जयंत नारलीकर (विज्ञान कथाओं का संकलन)* के प्राक्कथन *मी विज्ञान कथा का लिहितो* से साभार।